International Journal of Multidisciplinary Research and Technology
ISSN 2582-7359
Volume 1 Issue 7

दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला व सांस्कृतिक महत्व

डॉ. दीपा कौशिक

एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास
राजकीय कन्या महाविद्यालय
राजगढ़ (चूरू)

सारांश

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। इस संस्कृति की महानता उसके धर्म, दर्शन, कला, साहित्य तथा स्थापत्य परंपराओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारतीय स्थापत्य कला में मंदिर वास्तुकला का विशेष स्थान है। उत्तर भारत की नागर शैली तथा दक्षिण भारत की द्रविड़ शैली भारतीय मंदिर स्थापत्य की दो प्रमुख परंपराएँ हैं। दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला अपनी भव्यता, विशालता, सूक्ष्म शिल्पकला तथा सांस्कृतिक महत्त्व के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है। दक्षिण भारत के मंदिर केवल पूजा-अर्चना के स्थान नहीं थे, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र भी थे।

दक्षिण भारतीय मंदिरों में विशाल गोपुरम, ऊँचे विमानों, विस्तृत प्रांगणों, मंडपों तथा उत्कृष्ट मूर्तिकला का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। पल्लव, चोल, पांड्य, चालुक्य, होयसाल तथा विजयनगर शासकों ने इस स्थापत्य परंपरा को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। प्रस्तुत शोध-पत्र में दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला के ऐतिहासिक विकास, प्रमुख विशेषताओं तथा सांस्कृतिक महत्त्व का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: द्रविड़ वास्तुकला, दक्षिण भारतीय मंदिर, गोपुरम, विमाना, सांस्कृतिक विरासत, भारतीय स्थापत्य कला।

प्रस्तावना

भारत प्राचीन काल से ही धर्म और अध्यात्म का केंद्र रहा है। यहाँ मंदिरों का निर्माण केवल धार्मिक उद्देश्य से नहीं किया गया, बल्कि उन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र भी बनाया गया। भारतीय मंदिर वास्तुकला का विकास विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रूपों में हुआ। दक्षिण भारत में विकसित द्रविड़ शैली अपनी विशिष्ट स्थापत्य विशेषताओं के कारण अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला मुख्यतः तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और केरल में विकसित हुई। इन मंदिरों की सबसे प्रमुख विशेषता उनके विशाल गोपुरम, पिरामिडाकार विमाना, विस्तृत प्रांगण तथा उत्कृष्ट मूर्तिकला है। इन मंदिरों में धर्म, कला और विज्ञान का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

दक्षिण भारतीय मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं थे, बल्कि शिक्षा, संगीत, नृत्य और साहित्य के संरक्षण एवं विकास के केंद्र भी थे। मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती थीं। यही कारण है कि दक्षिण भारतीय मंदिर भारतीय सभ्यता और संस्कृति के महत्वपूर्ण प्रतीक माने जाते हैं।

दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला का ऐतिहासिक विकास

दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला का विकास भारतीय स्थापत्य परंपरा के महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। इसका प्रारंभिक स्वरूप गुप्तकाल के पश्चात विकसित हुआ, जब धार्मिक संरचनाओं को अधिक स्थायी एवं कलात्मक रूप प्रदान किया जाने लगा। प्रारंभिक काल के मंदिर अपेक्षाकृत छोटे तथा साधारण संरचना वाले थे, किंतु समय के साथ उनकी वास्तुकला अधिक जटिल, विशाल और कलात्मक होती गई। इस प्रारंभिक चरण में शैलकृत मंदिरों का निर्माण प्रमुख था, जिनमें विशाल चट्टानों को काटकर मंदिरों की रचना की जाती थी। इन मंदिरों में धार्मिक आस्था के साथ-साथ शिल्पकला और स्थापत्य कौशल का भी उत्कृष्ट प्रदर्शन दिखाई देता है।

दक्षिण भारतीय मंदिर स्थापत्य के विकास में पल्लव शासकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। सातवीं एवं आठवीं शताब्दी में पल्लवों ने महाबलीपुरम में अनेक शैलकृत मंदिरों और रथों का निर्माण कराया। पंच रथ तथा शोर मंदिर पल्लव स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। पल्लव काल में पत्थरों के व्यापक उपयोग से मंदिर निर्माण को स्थायित्व और भव्यता प्राप्त हुई। इस काल की मूर्तिकला धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है। मंदिरों की दीवारों एवं स्तंभों पर देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं तथा नृत्य-मुद्राओं का अत्यंत सूक्ष्म अंकन किया गया।

राष्ट्रकूट शासकों ने भी दक्षिण भारतीय स्थापत्य कला को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। एलोरा स्थित कैलाश मंदिर राष्ट्रकूट काल की सर्वोच्च स्थापत्य उपलब्धियों में से एक है। भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर एक ही विशाल चट्टान को काटकर निर्मित किया गया है, जो भारतीय शिल्पकला की अद्वितीय तकनीकी दक्षता को दर्शाता है। इसकी विशाल संरचना, मंडप, अलंकृत मूर्तियाँ तथा पौराणिक दृश्यों की प्रस्तुति इसे विश्व की महान स्थापत्य कृतियों में विशेष स्थान प्रदान करती है।

चोल काल : भारतीय स्थापत्य का स्वर्ण युग

दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला के इतिहास में चोल काल को स्वर्ण युग के रूप में मान्यता प्राप्त है। नौवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य चोल शासकों ने दक्षिण भारत में राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक समृद्धि तथा सांस्कृतिक उन्नति को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप मंदिर स्थापत्य कला अपने चरम उत्कर्ष तक पहुँची। चोल शासकों ने विशाल एवं भव्य मंदिरों का निर्माण कराया, जो केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं थे, बल्कि प्रशासनिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र भी थे। इस काल के मंदिरों में स्थापत्य विज्ञान, मूर्तिकला, चित्रकला तथा धार्मिक प्रतीकों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

चोल स्थापत्य की प्रमुख विशेषताओं में विशाल विमाना, विस्तृत प्रांगण, स्तंभयुक्त मंडप तथा अत्यंत सूक्ष्म मूर्तिकला शामिल हैं। तंजावुर स्थित बृहदेश्वर मंदिर चोल स्थापत्य कला का सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है। राजा राज चोल प्रथम द्वारा निर्मित यह मंदिर अपनी विशाल संरचना, ऊँचे विमाना तथा उत्कृष्ट शिल्पकला के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है। मंदिर की दीवारों एवं स्तंभों पर उकेरी गई मूर्तियाँ धार्मिक कथाओं, देवी-देवताओं तथा तत्कालीन सामाजिक जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं।

चोल काल की स्थापत्य परंपरा को आगे बढ़ाने में गंगैकोंडचोलपुरम् मंदिर का विशेष महत्त्व है। राजेन्द्र चोल प्रथम द्वारा निर्मित यह मंदिर चोल साम्राज्य की राजनीतिक शक्ति और सांस्कृतिक वैभव का प्रतीक माना जाता है। इसका विमाना अत्यंत भव्य एवं कलात्मक है, जो बृहदेश्वर मंदिर की स्थापत्य शैली का विकसित रूप प्रतीत होता है। मंदिर की मूर्तिकला में धार्मिक विषयों के साथ-साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की झलक भी मिलती है। इस प्रकार गंगैकोंडचोलपुरम् मंदिर दक्षिण भारतीय स्थापत्य कला की परिपक्वता और चोल शासकों की कलात्मक दृष्टि का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

राजेश्वर मंदिर

राजेश्वर मंदिर दक्षिण भारतीय द्रविड़ स्थापत्य परंपरा का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली उदाहरण माना जाता है। इस मंदिर की वास्तुकला में द्रविड़ शैली की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं, जिनमें विशाल प्रांगण, ऊँचे शिखर, स्तंभयुक्त मंडप तथा अत्यंत अलंकृत मूर्तिकला प्रमुख हैं। मंदिर का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि उसमें धार्मिक गरिमा के साथ-साथ कलात्मक सौंदर्य का भी समुचित समन्वय दिखाई देता है। मंदिर के स्तंभों एवं दीवारों पर निर्मित मूर्तियाँ दक्षिण भारतीय शिल्पकला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती हैं। इन मूर्तियों में देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं, नृत्य-मुद्राओं तथा संगीत वाद्यों का

अत्यंत सूक्ष्म एवं कलात्मक अंकन किया गया है। इससे तत्कालीन समाज के सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन की स्पष्ट झलक प्राप्त होती है।

मंदिर वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ

दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला भारतीय स्थापत्य कला की एक अत्यंत विकसित एवं समृद्ध परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में गोपुरम, विमाना, गर्भगृह, मंडप, मंदिर तालाब तथा उत्कृष्ट मूर्तिकला और चित्रकला का विशेष स्थान है। ये सभी तत्व मंदिरों को केवल धार्मिक संरचना ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और कलात्मक केंद्र के रूप में भी स्थापित करते हैं।

गोपुरम दक्षिण भारतीय मंदिरों की सबसे विशिष्ट पहचान माने जाते हैं। ये मंदिरों के विशाल एवं बहुमंजिला प्रवेश द्वार होते थे, जिन पर देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं तथा विभिन्न धार्मिक प्रतीकों की मूर्तियाँ अंकित की जाती थीं। गोपुरम धार्मिक आस्था, शक्ति तथा स्थापत्य सौंदर्य के प्रतीक माने जाते थे। मंदिर की भव्यता का अनुमान उसके गोपुरम के आकार और अलंकरण से लगाया जाता था।

विमाना मंदिर के गर्भगृह के ऊपर निर्मित पिरामिडाकार संरचना होती थी, जो द्रविड़ शैली की प्रमुख विशेषता है। इसका निर्माण कई स्तरों में किया जाता था तथा शीर्ष पर कलश स्थापित किया जाता था। तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर अपने विशाल विमाना के कारण विशेष प्रसिद्ध है। गर्भगृह मंदिर का सबसे पवित्र स्थान होता था जहाँ मुख्य देवता की प्रतिमा स्थापित की जाती थी। यह स्थान ध्यान, पूजा एवं आध्यात्मिक शांति का केंद्र माना जाता था।

मंडप मंदिरों के सभा स्थल होते थे, जहाँ धार्मिक अनुष्ठान, प्रवचन, संगीत एवं नृत्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। मंदिरों के स्तंभों पर की गई नक्काशी दक्षिण भारतीय शिल्पकला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती है। इसके अतिरिक्त मंदिर तालाब या पुष्करिणी जल संरक्षण तथा धार्मिक शुद्धि के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण थे। मंदिरों की दीवारों पर निर्मित मूर्तियाँ एवं भित्तिचित्र तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं।

मंदिरों का सांस्कृतिक महत्व

धार्मिक महत्व

दक्षिण भारतीय मंदिर भारतीय धार्मिक परंपरा और आध्यात्मिक चेतना के प्रमुख केंद्र रहे हैं। ये मंदिर केवल पूजा-अर्चना के स्थान नहीं थे, बल्कि धार्मिक जीवन को व्यवस्थित और

सुदृढ़ करने वाले संस्थान भी थे। मंदिरों में विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा की जाती थी तथा नियमित रूप से पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान और धार्मिक उत्सव आयोजित किए जाते थे। मीनाक्षी मंदिर, बृहदेश्वर मंदिर, श्रीरंगम मंदिर तथा विरुपाक्ष मंदिर जैसे प्रमुख मंदिर आज भी लाखों श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र हैं। इन मंदिरों ने समाज में धार्मिक विश्वास, नैतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिक अनुशासन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मंदिरों के माध्यम से भक्ति आंदोलन को भी व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ, जिसने समाज में समानता और धार्मिक समरसता की भावना को प्रोत्साहित किया।

सामाजिक महत्व

दक्षिण भारतीय मंदिर सामाजिक संगठन और सामुदायिक जीवन के प्रमुख केंद्र थे। प्राचीन काल में मंदिरों के परिसर में जनसभाएँ, धार्मिक प्रवचन, विवाह समारोह, सांस्कृतिक आयोजन तथा अन्य सामाजिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती थीं। मंदिर समाज के विभिन्न वर्गों को एक साझा मंच प्रदान करते थे, जहाँ लोग सामूहिक रूप से धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेते थे। इससे सामाजिक एकता, सहयोग और सामुदायिक भावना को बल मिलता था। मंदिरों के उत्सवों और मेलों में बड़ी संख्या में लोग सम्मिलित होते थे, जिससे सामाजिक संबंधों को मजबूती मिलती थी। इस प्रकार मंदिर केवल धार्मिक संस्थान नहीं थे, बल्कि सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण केंद्र भी थे।

शैक्षिक महत्व

दक्षिण भारतीय मंदिर शिक्षा और ज्ञान के प्रमुख केंद्रों के रूप में भी कार्य करते थे। मंदिरों में वेद, उपनिषद, दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, संगीत और नृत्य की शिक्षा प्रदान की जाती थी। अनेक मंदिरों के साथ पाठशालाएँ और गुरुकुल जुड़े हुए थे, जहाँ विद्यार्थियों को पारंपरिक ज्ञान प्रदान किया जाता था। विद्वानों, आचार्यों तथा कलाकारों को मंदिरों द्वारा संरक्षण दिया जाता था। मंदिरों में पांडुलिपियों का संग्रह और संरक्षण भी किया जाता था, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास हुआ। इस प्रकार मंदिर शिक्षा और संस्कृति के संरक्षण के महत्वपूर्ण माध्यम बने।

आर्थिक महत्व

दक्षिण भारतीय मंदिर आर्थिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध संस्थाएँ थीं। मंदिरों के पास विशाल भूमि, दान तथा संपत्ति होती थी, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहती थी। कृषि और व्यापार से प्राप्त आय का उपयोग मंदिरों के रखरखाव, धार्मिक कार्यों तथा जनकल्याण के कार्यों में किया जाता था। मंदिर स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। मूर्तिकार, चित्रकार, वास्तुकार, शिल्पकार, संगीतकार, नर्तक और पुजारी मंदिरों से

जुड़े रहते थे तथा उन्हें रोजगार प्राप्त होता था। इस प्रकार मंदिरों ने स्थानीय आर्थिक संरचना को सुदृढ़ करने में योगदान दिया।

कला और संगीत का संरक्षण

दक्षिण भारतीय मंदिर भारतीय कला, संगीत और नृत्य के प्रमुख संरक्षण केंद्र रहे हैं। भरतनाट्यम नृत्य तथा कर्नाटक संगीत जैसी महान सांस्कृतिक परंपराओं का विकास मंदिरों से जुड़ा हुआ है। धार्मिक उत्सवों और अनुष्ठानों के दौरान संगीत और नृत्य प्रस्तुतियाँ आयोजित की जाती थीं। मंदिरों की दीवारों पर निर्मित मूर्तियाँ, भित्तिचित्र तथा नक्काशी भारतीय शिल्पकला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती हैं। इन कलात्मक अभिव्यक्तियों में धार्मिक कथाओं, सामाजिक जीवन तथा सांस्कृतिक मूल्यों का सुंदर चित्रण मिलता है। इस प्रकार दक्षिण भारतीय मंदिरों ने भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, संवर्धन और विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रमुख दक्षिण भारतीय मंदिर

- बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर : तंजावुर स्थित बृहदेश्वर मंदिर दक्षिण भारतीय चोल स्थापत्य कला का सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है। इसका निर्माण राजा राज चोल प्रथम द्वारा कराया गया था। यह मंदिर अपने विशाल विमाना, उत्कृष्ट मूर्तिकला तथा स्थापत्य भव्यता के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। मंदिर की दीवारों पर उकेरी गई मूर्तियाँ धार्मिक कथाओं और सांस्कृतिक जीवन का सुंदर चित्र प्रस्तुत करती हैं। यह मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में भी सम्मिलित है।
- **मीनाक्षी मंदिर, मदुरै:** मदुरै का मीनाक्षी मंदिर दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली की भव्यता का प्रतीक माना जाता है। यह मंदिर अपने विशाल गोपुरमों, रंगीन मूर्तियों तथा अलंकृत स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर परिसर में अनेक मंडप, स्तंभ और धार्मिक संरचनाएँ निर्मित हैं, जो इसकी कलात्मक उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती हैं।
- श्रीरंगम मंदिर: श्रीरंगम मंदिर भारत के सबसे बड़े मंदिर परिसरों में से एक है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है तथा अपने विशाल प्रांगण, अनेक गोपुरमों और धार्मिक महत्त्व के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर की स्थापत्य योजना द्रविड़ शैली की उत्कृष्टता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है।
- विरुपाक्ष मंदिर, हम्पी: हम्पी स्थित विरुपाक्ष मंदिर विजयनगर स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मंदिर अपनी ऐतिहासिक महत्ता, भव्य गोपुरम तथा सुंदर मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर विजयनगर साम्राज्य की सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

- पद्मनाभस्वामी मंदिर: केरल शैली में निर्मित पद्मनाभस्वामी मंदिर धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी स्थापत्य शैली में द्रविड़ और केरल वास्तुकला का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यह मंदिर अपनी धार्मिक परंपराओं और कलात्मक संरचना के लिए प्रसिद्ध है।

आधुनिक संदर्भ में दक्षिण भारतीय मंदिरों का महत्व

आज दक्षिण भारतीय मंदिर केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत के प्रमुख आकर्षण भी हैं। लाखों पर्यटक इन मंदिरों की स्थापत्य कला और सांस्कृतिक भव्यता को देखने आते हैं। यूनेस्को द्वारा कई दक्षिण भारतीय मंदिरों को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है। यह मंदिर भारतीय संस्कृति और कला की वैश्विक पहचान बन चुके हैं। आधुनिक समय में इन मंदिरों के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भारतीय संस्कृति की इस महान परंपरा से परिचित हो सकें।

निष्कर्ष

दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। द्रविड़ शैली के मंदिर अपनी भव्यता, उत्कृष्ट शिल्पकला और सांस्कृतिक महत्त्व के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों ने भारतीय समाज के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मंदिरों के माध्यम से भारतीय कला, संगीत, नृत्य और साहित्य को संरक्षण प्राप्त हुआ। वर्तमान समय में इन ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है ताकि भारत की सांस्कृतिक पहचान और गौरव भविष्य में भी सुरक्षित रह सके।

संदर्भ सूची

1. ब्राउन, पर्सी। *भारतीय वास्तुकला*। नई दिल्ली: साहित्य प्रकाशन।
2. क्रामरिश, स्टेला। *हिन्दू मंदिर की संरचना और दर्शन*। नई दिल्ली: भारतीय विद्या भवन।
3. हार्डी, एडम। *भारतीय मंदिर वास्तुकला*। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. मिशेल, जॉर्ज। *हिन्दू मंदिर: स्वरूप, अर्थ एवं विकास*। नई दिल्ली: पेंगुइन प्रकाशन।
5. शास्त्री, के. ए. नीलकंठ। *चोल साम्राज्य का इतिहास*। चेन्नई: ओरिएंट लॉन्गमैन।
6. अग्रवाल, वासुदेव शरण। *भारतीय कला और संस्कृति*। वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन।
7. पाण्डेय, राजबली। *भारतीय संस्कृति और धर्म*। इलाहाबाद: हिंदी साहित्य सम्मेलन।
8. शर्मा, रामशरण। *प्राचीन भारत का इतिहास*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. सिंह, उपेन्द्र। *प्राचीन एवं प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत का इतिहास*। नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन।
10. दक्षिण भारतीय मंदिर स्थापत्य से संबंधित विभिन्न शोध-पत्र, जर्नल एवं विश्वविद्यालय प्रकाशन।